

SHRI KAILASH KHER

Bracketing a phenomenon like Kailash Kher as a mere Singer, would be like bracketing the phenomenon of love into just one expression. It would not be an exaggeration to say that Shri Kailash Kher's life, music and his journey so far are an asset to Indian heritage. He was born on July 07, 1973. At a very tender age his father Mahashay Pandit Mehar Singh Kher, a loved Priest would perform with his iktara to Nirguni (Mystical poetry), Lok Geet (Folk songs) with little Kailash in tow. He then witnessed how music could move and empower people, a thirst imbibed by his father and this is how he found his medium through which he would serve the nation. His father made sure that Shri Kailash knew the value of the freedom he had as a citizen of India.

2. Shri Kher started out on his search for the light within. However, none could grasp the spectrum of his ideas and dreams to see that it was not the glitz of the film industry that attracted him but a thirst to learn this rare, mostly unacknowledged kind of music, Nirguni, simple yet powerful with no conditioning or set methods.

3. Shri Kher left home at an early age against the wish of his elders in persistence of music hoping that he will return fruitful very soon but life made it more difficult for a teenager in a city like Delhi . This is where the real struggle started but it did not stop there as even today it lingers on when everything is evolved and changed because rarely people/family supports Arts and Sports like other academics.

4. However, in a search that spanned almost two decades, Shri Kher did not find a single institution celebrating Indian Lok Sangeet. He still kept moving forward on pilgrimage, spending months with nomadic musicians across the north, spending time with the Jogi (singers of the jogiya style of music), Bhajanopdeshak(pracharak), Swang(folk theatre artists), Dhola(Natt, Nakkaal), Nomadic historian contemporary singers, who would sing of the current social issues and glories where one could learn many lessons of life. When he had lost everything materialistic in search of music and was at his lowest point in life, he was in Rishikesh. There he sang Nirguni, Spiritual songs before the Ganga aarti to which the most kind and humble sadhus and saints would swirl and dance to the songs. This exposure to varied forms of music, along with the admiration for stalwarts like Pandit Kumar Gandharva, Pandit Bhimsen Joshi, Pandit D.V.Paluskar, Bade Ghulam Ali Khan Sahab and Nusrat Fateh Ali Khan, aided his journey to creating internationally sensational Music. It was then he felt that his journey has not yet ended and that this kind of songs/music had to be made known to the world, thus started a new journey of struggle when he came to Mumbai to make a mark of its own kind.

5. Today, Shri Kher is a voice of hope and courage, he has bedazzled the audiences around the world, with the power of Indian Lok Sangeet Nirguni. He has created a niche for contemporary folk inspired music among the monopolised Film Industries as well as global audiences. He feels that Bhartiya languages are a major fabric that binds our roots to our being. He has sung in more than 20 languages, he keeps using words from all over the country for his music as different languages fascinates him. He invents his own words for his songs and says, “this is my way of Srajan (creating) an expression to describe the longing of inner being”. This is also one of the many reasons why all the generations can associate to the meaningful feelings of the songs.

6. Shri Kher has taken the Soil of India through his songs to the most respected music festivals worldwide. He along with his band Kailasa has performed at more than 1000 concerts all over the world in a short span of a decade. He is also amongst the few world celebrities whose photograph was displayed at Historical Empire Estate Building. Closer to home Shri Kher is an integral part of every cultural and traditional festivals from India to International celebrations of Indian culture and way to life.

7. Shri Kher has been conferred the Yash Bharti award UP, which is the highest civilian award by the Uttar Pradesh Government. Shri Kher was the Goodwill Ambassador for “Millennium Development Goals”, a pioneering program organised by the United Nations for eradication of poverty and many other social issues not just in India but also many other countries.

8. In 2014, the Honorable Prime Minister of India Shri Narendra Modi nominated him as one of the Ambassadors of Swachh Bharat Mission. On 2nd October 2014, the day Swachh Bharat campaign was launched with the official Anthem composed and sung by him.



श्री कैलाश खेर

श्री कैलाश खेर जैसे अद्भुत व्यक्तित्व के लिए महज गायक जैसे शब्द का उपयोग करना ठीक उसी प्रकार होगा जैसे कि प्रेम जैसी विशाल भावना को महज एक शब्द में अभिव्यक्त करना। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आपका जीवन, संगीत और आपकी अब तक की यात्रा, भारतीय विरासत के लिए एक संपदा है। आपका जन्म जुलाई 07, 1973 को हुआ था। आपकी बहुत ही छोटी सी आयु में, आपके पिता, लोकप्रिय पुजारी महाशय पंडित मेहर सिंह खेर ने अपनी इकतारा से निगुर्णी (रहस्यवादी काव्य), लोकगीत (फॉक सांग्स) की प्रस्तुति घुटनों पर चलते हुए छोटे कैलाश के साथ दी। तब आपने देखा कि संगीत किस प्रकार लोगों के दिलों को जीत सकता है और उन्हें ताकत दे सकता है। इस प्रकार, पिता के द्वारा जागृत की गई संगीत की इस पिपासा ने ही आपको राष्ट्र की सेवा के लिए संगीत को अपने जीवन का माध्यम बनाने के लिए प्रेरित किया। आपके पिता ने स्वतंत्र भारत के नागरिक के रूप में स्वतंत्रता की कीमत समझने की शिक्षा आप में कूट-कूट कर भर दी थी।

2. आप स्वयं के भीतर के प्रकाश की खोज में निकल पड़े। हालांकि, कोई भी आपके इन विचारों एवं सपनों को नहीं पहचान सका कि यह फिल्म उद्योग की चकांचौंध नहीं थी जिसने आपको इस ओर आकर्षित किया अपितु यह उनकी उस दुर्लभ और अज्ञात संगीत, "निगुर्णी" को सीखने की ललक ही थी जो अति सरल किंतु सशक्त तथा बिना किसी शर्त या निर्धारित प्रक्रियाविधि की विधा है।

3. आपने बहुत कम उम्र में अपने बड़े बुजुर्गों की इच्छा के विरूद्ध किंतु संगीत साधना की इस आशा से घर छोड़ दिया था कि आप शीघ्र ही सफल होकर वापस आएँगे, परंतु दिल्ली जैसे शहर में एक किशोर के लिए यह जीवन यात्रा अत्यंत कठिन बन गई। यही वह जगह हैं जहाँ आपके संघर्ष की असली शुरूआत हुई लेकिन यह यहीं समाप्त नहीं हुई, अपितु आज भी चल रही है, क्योंकि जब सब कुछ परिवर्तित हो गया है और बदल गया है, तब भी बहुत ही कम लोग/परिवार, अन्य शिक्षा विषयों की भाँति कला एवं खेल का समर्थन करते हैं।

4. तथापि, दो दशकों से अधिक की अपनी तलाश के दौरान, आप भारतीय लोक संगीत के लिए प्रतिष्ठित किसी भी संस्था से रूबरू नहीं हो पाए। आप तब भी तीर्थ यात्रा पर जाते रहे, महीनों तक उत्तरी क्षेत्र में उन खानाबदोश संगीतकारों, जोगी (संगीत की जोगिया शैली के गायक), भजनोपदेशक (प्रचारक), स्वांग (फॉक थिएटर आर्टिस्ट), धौला (नट, नक्काल), खानाबदोश ऐतिहासिक कंटेम्पररी गायकों, जो वर्तमान सामाजिक मुद्दों एवं उपलब्धियों से संबंधित गीत गाते हैं, के साथ समय बिताते रहे, जहां कोई भी जीवन के बहुत सारे पाठ सीख सकता है। जब आपने संगीत की साधना में सभी भौतिक संसाधनों को खो दिया तथा जीवन में आप बिल्कुल ही निम्नतम स्तर पर आ गए थे, उस समय आप ऋषिकेश में थे। वहाँ आपने गंगा आरती में निगुर्णी भक्ति संगीत का गायन किया जिस पर सरलहृदय संतजन झूमने और नृत्य करने लगते थे। संगीत की विभिन्न विधाओं के प्रति आपके इस रुझान और पंडित कुमार गंधर्व, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित डी. वी. पालुशकर, बड़े गुलाम अली खान साहब एवं नुसरत फतेह अली खान जैसे प्रसिद्ध व्यक्तित्व द्वारा की गई प्रशंसा ने अंतरराष्ट्रीय तौर पर भावनात्मक संगीत के सृजन में आपकी बहुत सहायता की। इस समय आपने महसूस किया कि इस यात्रा का अंत यहीं नहीं है अपितु इस प्रकार के गीत संगीत से विश्व को परिचित किया जाना उचित है। इस प्रकार आपने संघर्षों की एक नई यात्रा शुरू कर दी तथा संगीत के क्षेत्र में एक मिसाल कायम करने के लिए आप मुंबई आ गए।

5. वर्तमान में, आप आशा एवं उत्साह की आवाज हैं। आपने सशक्त भारतीय लोक संगीत निगुर्णी से विश्व के श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया है। आपने एकाधिकारवाद वाले फिल्म उद्योग तथा वैश्विक दर्शकों के बीच कंटेम्पररी फॉक इंस्पायर्ड संगीत के क्षेत्र में एक मिसाल कायम कर दी है। आप मानते हैं कि भारतीय भाषाएँ वह सशक्त बंधन हैं जो हमारी एकता की जड़ों को और सुदृढ़ता प्रदान करती हैं। आपने 20 से अधिक भाषाओं में गाया है। आपको देश की विभिन्न भाषाएँ आकर्षित करती हैं तथा उन भाषाओं के शब्द आप अपने गायन में उपयोग करते रहते हैं। आप अपने गीतों के लिए स्वयं शब्दों का चयन करते हैं तथा कहते हैं कि "अंतरात्मा की पुकार को अभिव्यक्ति देने के लिए यह मेरी सृजनात्मक पद्धति है"। यह उन कारकों में से एक है जिनके कारण इन गीतों के भावानात्मक अर्थों के साथ भावी पीढ़ियाँ आकर्षित होंगी।

6. आप अपने संगीत के माध्यम से विश्व के सर्वाधिक सम्मानित संगीत समारोहों में भारत की मिट्टी की सुरभि बिखेर देते हैं। आप एवं आपके बैंड कैलाश ने एक दशक की छोटी अवधि में पूरे विश्व में 1000 से अधिक कंसर्टों में प्रस्तुतियां दी है। आपका शुमार विश्व के ऐसे चुनिंदा सेलेब्रेटियों में से हैं जिनकी फोटोग्राफ हिस्टोरिकल एम्पायर एस्टेट बिल्डिंग में लगाई गयी है। आप अपने देश भारत से लेकर अंतरराष्ट्रीय समारोहों तक में, भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जीवन के प्रत्येक सांस्कृतिक तथा पारंपरिक महोत्सवों के अभिन्न हिस्से रहे हैं।

7. आपको यश भारती पुरस्कार, उत्तर प्रदेश जो उत्तर प्रदेश सरकार का सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार है, से सम्मानित किया जा चुका है। आप भारत में ही नहीं अपितु अन्य देशों में भी गरीबी उन्मूलन एवं अन्य कई सामाजिक मुद्दों हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित एक अग्रणी कार्यक्रम "मिलेनियम डेवलेपमेंट गोल्डस" के लिए गुडविल एम्बेसेडर रहे हैं।

8. वर्ष 2014 में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आपको स्वच्छ भारत के एम्बेसेडरों में से एक एम्बेसेडर नामित किया। 2 अक्तूबर, 2014 को, जिस दिन स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत हुई, इसके लिए औपचारिक गीत आपके द्वारा रचे और गाए गए।